संस्कृते कलासौन्दर्योत्कर्षः

द्वितीय भाग

संरक्षक
श्रीकिशोर मिश्र

प्रधानसम्पादक
प्रो. आनन्द कुमार श्रीवास्तव

सम्पादकमण्डल
प्रो. गोपबन्धु मिश्र
प्रो. मनुलता शर्मा

संस्कृतविभाग
कलासङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

Scanned with CamScanner

संस्कृते कलासौन्दर्योत्कर्षः

प्रथमो भागः- संस्कृताङ्ग्लनिबन्धानां संग्रहः
द्वितीय भाग- हिन्दी-निबन्धों का संग्रह

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य प्रथम भाग रु. 350/-
द्वितीय भाग रु. 850/-
सम्पूर्ण (दो भाग) रु. 1000/-

वर्ष 2016

प्रकाशक
संस्कृतविभाग, कलासङ्काय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

प्राप्तिस्थान-
प्रकाशन कक्ष (लक्ष्मणदास अतिथिगृह के सामने)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

अक्षरसंयोजन : धर्म पाल

मुद्रक-
किशोर विद्या निकेतन
बी-2/236-ए-1 भदैनी, वाराणसी-221001
दूरभाष : 9415996512

Scanned with CamScanner

रूपगोस्वामी और सौन्दर्य के तत्त्व

डॉ. नौनिहाल गौतम*

वृन्दावन के षट् गोस्वामियों में श्रीरूपगोस्वामी गौड़ीय सम्प्रदाय में अपनी भक्ति और विद्वत्ता के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये मूलतः कर्णाटक निवासी भारद्वाजगोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके मूलपुरुष श्री जगद्गुरु सर्वज्ञ थे। उनके पुत्र यजुर्वेद के पारंगत विद्वान् श्री अनिरुद्ध हुए। अनिरुद्ध के पुत्र रूपेश्वर हुए जो उद्भट विद्वान् थे। उनके पुत्र पद्मनाभ भी यजुर्वेद और उपनिषदों के ज्ञाता थे। पद्मनाभ की कई संतानों में से एक मुकुन्द थे। उनके पुत्र कुमार हुए। कुमार की कई संतानों में से तीन संतोष, अमर और वल्लभ थे। चैतन्य महाप्रभु की कृपादृष्टि के अनन्तर ये तीनों क्रमशः सनातन, रूप और अनुपम नाम से प्रसिद्ध हो गये। पिता श्रीकुमार ने तीनों को संस्कृत और फारसी की शिक्षा दिलाई। इनकी संस्कृत की शिक्षा पं. सर्वानन्द सिद्धान्तवाचस्पति तथा अरबी-फारसी की शिक्षा सप्तग्राम के भूमि अधिकारी सैयद फखरुद्दीन के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। इस विशेषज्ञता के कारण गौड के बादशाह हुसैन शाह के राजमन्त्री मालाधर बसु ने सनातन और रूप गोस्वामी को बादशाह हुसैनशाह के राजदरबार में नौकरी दिलवा दी। इनकी योग्यता से प्रसन्न बाहशाह ने इन्हें मन्त्री बना दिया तथा इनके नामकरण क्रमशः दबिर खास और शाकिर मलिक कर दिये। दरबार में रहने तथा मुसलमान रईसों जैसा रहन सहन होने पर भी ये वैष्णव धर्म के अनुयायी तथा अनुरागी बने रहे। इन्होंने रामकेलि नगर से कुछ दूर 'कन्हाई नाटशाला' नाम से प्रसिद्ध एक मूर्तिशाला बनवाई थी जिसकी कृष्णमूर्तियों में से कुछ तो अभी भी विद्यमान हैं। रूपगोस्वामी के भतीजे श्रीजीव गोस्वामी ने लघुतोषणी ग्रन्थ में अपने परिवार का परिचय दिया है। बलदेव उपाध्याय ने रूपगोस्वामी का समय १४९१-१५९१ ई. माना है।[१]

असीम वैभव से वैराग्य और चैतन्य महाप्रभु से साक्षात्कार ने इन्हें संत रूपगोस्वामी बना दिया। बाद में वे वृन्दावन में ब्रह्मकुण्ड तथा नन्दग्राम के समीप रहकर भगवान् कृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगे और वृन्दावन की पवित्र भूमि को छोड़कर एक रात्रि के लिए भी कहीं अन्यत्र नहीं गये। इन्होंने चैतन्य महाप्रभु के भक्ति सिद्धान्त को शास्त्रीय रूप दिया। ये कृष्ण के अनन्य

* सहायक-प्राध्यापक, संस्कृत-विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भक्त थे। यह तो सुप्रसिद्ध ही है कि कृष्ण का स्वरूप सर्व-सौन्दर्य-संग्रह है-

दर्शनं नो दिदृक्षूणां देहि भागवतार्चितम्।
रूपं प्रियतमं स्वानां सर्वेन्द्रियगुणाञ्जनम्।।
स्निग्धप्रावृड्घनश्यामं सर्वसौन्दर्यसङ्ग्रहम्।
चार्वायतचतुर्बाहुं सुजातरुचिराननम्।।[२]

पाश्चात्य विद्वान् बर्कले (Burkley) ने भी परब्रह्म (भगवान्) को ही परमसौन्दर्य कहा है-

The ultimate source of Beauty is God.[3]

श्रीकृष्ण के सौन्दर्य पर मुग्ध श्रीरूपगोस्वामी ने अपनी कृतियों में श्रीकृष्ण के आश्रय से अपनी लेखनी चलायी। चैतन्य महाप्रभु के इन कृपापात्र शिष्य ने काव्य और काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों की रचना की। इनके ग्रन्थों का परिचय-

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ- भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्जवलनीलमणि और नाटकचन्द्रिका॥

अन्यग्रन्थ-

(क) हंसदूत, उद्धवसन्देश

(ख) विदग्धमाधवम्, ललितमाधवम् और दानकेलिकौमुदी

(ग) अष्टादशछन्दस्, मथुरामहिमा

(घ) उत्कलिकावल्लरी

(ङ) पद्यावली

(च) संक्षेपभागवतामृतम्।

ग्रन्थरचना के उपक्रम में उन्होंने सौन्दर्य के तत्त्वों को निबद्ध कर दिया है। उन्होंने पर्याप्त पर्यटन किया था तथा गृहस्थ, राजसी और वैरागी- इन तीनों तरह के जीवन को जिया था। इससे उनके अनुभव संसार का विस्तृत होना स्वतः प्रमाणित है। कलाओं का सौन्दर्यबोध उन्हें पर्याप्त था-इसका उदाहरण "कन्हाई नाटशाला" विद्यमान है।

सौन्दर्यशास्त्र एवं सौन्दर्य के तत्त्वों पर विचार की परम्परा

आचार्य नगेन्द्र का मानना है कि भारतीय वाङ्मय में सौन्दर्य शब्द का प्रयोग अधिक प्राचीन न होने पर भी उसमें सौन्दर्य की अवधारणा और उसके वाचक, व्यंजक शब्द तथा उक्तियाँ विद्यमान हैं। रामायण में भी सुन्दर के लिए रमणीय, रम्य, शोभन, शुभदर्शन, चारु, रुचिर आदि पर्यायों को प्रयोग हुआ है। पश्चिम में सौन्दर्यशास्त्र को दर्शन के एक अंग रूप में स्वीकार किया गया है। अतः वहाँ दार्शनिक चिन्तन के अन्तर्गत सौन्दर्यचिन्तन की परम्परा आरम्भ से ही रही है : प्लेटो ने तत्त्व चिंतन की परिधि में सौन्दर्य का विवेचन भी किया है।[४]

Scanned with CamScanner